जोधपुर चित्रशैली में आखेट का चित्रांकन

हीरालाल कुम्हार

मानव जीवन की तरह कला के उदय का इतिहास भी बड़ा रहस्यमय, विराट और अज्ञात है। कला की आध यात्मिक भावभूमि मे आलांकि मनुश्य भी स्वयमेव एक कलाकृति है। और स्वभावतः ही कला के प्रति उसका प्रकृत प्रेम तथा घनिश्ठ सम्बन्ध रहा है। प्रागैतिहासिक युग की गुफायें तथा च्रानों पर खुदे हुए जो चित्र मिले है। उनकों देखने से आदिम मनुश्य की कला अभिरूचि पर अनुठा प्रकाष पड़ता है। मानव सभ्यता ने अब तक कितनी प्रगति की है। इसका ठीक-ठीक इतिहास विष्व की आदिम कलाकृतियों को देखकर भली-भाँति जाना जा सकता है। इन कला-अवषेशों को देखकर ज्ञात होता है। मानव हृदय की चेश्टाओं और प्रवृतियों को विषद रूप मे प्रकट करने के लिये ललित कलाओं का विषेश योग रहा है। भारत में चित्रकला का जन्म कब और कैसे हुआ, यह एक अत्यन्त विवादास्पद प्रष्न है। लेकिन प्रागैतिहासिक मानव ने किस तरह अपनी संस्कृति,सभ्यता और अपने भाव- विचारों का विकास किया, सौभाग्य वंष इसके बहुत से तथ्य आज प्रकाष मे आ चुके भारत के प्रागैतिहासिक आलेखों एवं चित्रों का अनुषीलन करने वाले विद्वानों मे एलन हाटन ब्राड्रिक, स्टुअर्ट पिगाट, डी°यच°गोर्डन, प्रो°जुनेर लियोनार्डअदम, श्री यफ° आर° अल्चिन तथा श्रीमती अल्चित, सी°ए°सिल्वेलाड, पंचानन मित्र और मनोरंजन घोश का नाम प्रमुख है। ब्राड्रिक की पुस्तक प्रि- हिस्टोरिक पैटिंग और पिगाट की पुस्तक 'प्रि-हिस्टोरिक इण्डिया' इस विशय की प्रामाणिक साम्रगी से पूर्ण है।1

मारवाड उत्तर मुगलकाल मे राजस्थान का एक विस्तृत राज्य (पष्चिम भाग मे 14 ˚37 से 27 ˚42 उत्तरी अक्षांष तथा 70 ˚5 से 75 ˚22 पूर्वी देषान्तर था।)

साक्ष्यों से प्रमाणित होता है कि मारवाड़ किसी समय समुद्राच्छादित प्रदेष था। मरूप्रदेष मे उपलब्ध नमक की झीलो व फलों, षंख, सीपी आदि के उपलब्ध रूपों के आधार पर यहाँ समुद्र होने का अनुमान किया जाता है। रामायण मे भी उल्लेख है कि इस प्रदेष मे पहले समुद्र था जो राम आग्नेयास्त्र से षुश्क हो गया। रामायण में यह भी कहा गया है कि इस प्रदेष मे आभीर जाति निवास करती थी। मारवाड़ को मरूस्थल, मरूभूमि, मरूप्रदेष आदि नामों से जाना जाता है। राजस्थान मे जो बालुकामय है, उसे मारवाड़ कहा जाता है। 16वीं सदी के प्राक राजस्थानी चित्रो के बाद क्षेत्रीय षैलियों के उदय एवं क्रमिक विकास का इतिहास इसी काल से षुरू होता है।

डॉ° मोती चन्द्र के अनुसार ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं साहित्यिक साक्ष्यों से भी मारवाड़ एवं गुजरात की निकटता प्रमाणित होता है। गिरनार पर्वत से मिले षिलालेख से इसकी पुश्टि होती है। यह षक नरेष रूद्रदामन का है जिसका राज्य काल वि°स°207 ई° (सन् 150) है। इस षिलालेख के अनुसार षक नरेष का राज्य विस्तार मारवाड़ और साबरमती के आस-पास का प्रदेष था। दसवीं सदी में मारवाड़ एवं गुजरात का साहित्य एक ही था जो मरू-गुजर साहित्य के नाम से जाना जाता था। भाशा एवं संस्कृति की निकटता, भौगोलिक दृश्टि से निकटता तथा वास्तु मे समानता के आधार पर कहा जा सकता है कि मारवाड़ एवं गुजरात में चित्रो की षैली भी एक ही रही होगी । ग्यारहवी षताब्दी से सोलहवीं षताब्दी तक गुजरात पष्चिमी भारतीय षैली के चित्रों का प्रमुख केन्द्र था। भारतीय चित्रों के इतिहास में सत्रहवीं सदी का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। सोलहवीं सदी के प्राक् राजस्थानी चित्रो के बाद क्षेत्रीय षैलियों के उदय एवं क्रमिक विकास का इतिहास इसी काल से षुरू होता है। राजस्थान अनेक छोटे-बडे राज्यो मे विभक्त था। जहाँ राजपूतों की अलग -अलग

षाखाओं ने राज्य किया । इन रजवाडों ने चित्रकला को पूर्ण आश्रय दिया तथा उनके आश्रय मे चित्रकारों ने स्थानीय परम्परा के साथ जो चित्र बनाये वे ही वहाँ कि चित्र षैली हो गयी।2.

धीरे- धीरे सांमती संस्कृति यहाँ पनपने लगी जिससे यहाँ की चित्रकला में जैन, गुजरात षैली और अपभ्रंष षैली का नवीकरण होने लगा। जोधपुर मारवाड़ राज्य का प्रमुख केन्द्र एवं राजधानी रहा। जोधपुर नगर राठौर राव जोधा ने 1458 ई° में बसाया था। 1610 ई° मे राजा गजसिंह ने यहाँ का षासन सम्भाला। गजसिंह (1610 से 30 ई°) के पष्चात् जसवन्त सिंह प्रथम (1638-78 ई°) षासक हुए जो महान कला प्रेमी थे। इनके षासनकाल मे चित्र सृजन हुऐ । इनके पष्चात् अजीत सिंह 1724 ई° तक अभय सिंह (1724-48 ई°) तथा बख्तसिंह(1724-52 ई°) के समय क्रमष जोधपुर मे कई सुन्दर चित्रों का निर्माण हुआ । बख्तसिंह के पुत्र विजय सिंह (1753-66 ई°) के समय राधा- कृश्ण एवं नायक -नायिका भेद, आखेट आदि चित्रों का सृजन हुआ। यह परम्परा भीमसिंह (1766-1803 ई°) के काल तक अनवरत चली। महाराजा मानसिंह (1803-43 ई°) के समय रामायण, दर्गा सप्तषती, ढोलामारू आदि विशयों से सम्बन्धित अनेक पोथी चित्रों का निर्माण हुआ। तख्तसिंह (1843-73 ई°) तथा जसवन्त सिंह द्वितीय (1873-95 ई°) के समय कलात्मक गतिविधियों का समुचित रूप से विकास हुआ।3.

राजस्थान की चित्रकला अपनी संस्कृति का प्रतिबिम्ब हैं, इसी कारण मारवाड स्कूल अपनी कलात्मकता के करण अधिक प्रसिद्व हुआ है। मोहम्मद गोरी से हार जाने के बाद राश्ट्रकूट राजपूतों को जब कन्नोज छोड़कर चले आये तथा उन्होंने मरूस्थल, मरूप्रदेष, मरूभूमि व कालान्तर मे मारवाड़ कहलाया। अरावली पर्वत मालाओं के पष्चिम मे बसा इस विषाल विशय भू भाग मे 10वीं से 15वीं सदी तक कलात्मक गतिविधियों का समुचित रूप से विकास हुआ। मारवाड़ लघुचित्र षैली जिसका जन्म 16वीं षताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है। इस षैली के चित्रों की रेखाए सरल ओर भाव भगिमाएं प्रखर है तथा रंगात्मकता देखते ही बनती है।4

प्राचीन ऐतिहासिक ग्रथों मे आखेट का विस्तारपूर्णक उल्लेख मिला है। इन्ही ग्रंथों मे मुगल सम्राट और राजपूत राजाओं के वन्य पषुओं के संदर्भ प्राप्त होते है। राजपूत राजाओं का कार्य उनके षौर्य एवं प्रतिश्ठा से जुड़ा हुआ था। साथ ही एक तरह से युद्व आदि का खेल के साथ प्रषिक्षण था इसलिए राज्य अंतर्गत वन प्रदेषों को सुरक्षित रखते थे। इन क्षेत्रो को रखात कहा जाता था। जिनमें पाए जाने वाले जानवर षेर, चीते, भालू, षावक, सूअर व हिरण तथा जल जीव एवम् छोटे-बडे पेड़ पौधे जैसे बेर, बबूल, ईख के जंगल और चारागाह आदि का लेखा- जोखा विवरण सहित रखा जाता था। जब भी कोई अतिथिगण राजपूत राजाओं के यहाँ आता तो तत्कालीन राजा उनको षिकार पर ले जाना अपना गौरव मानते थे। इसी यात्रा के लिए जंगलों में भव्य विश्राम गृह बने होते थे, जिनमे विश्राम तथा भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था रहती थी। जिसमे वे आखेट का पूरा आनंद लेते थे। राजा प्रायः वसंत ऋतु मे षिकार पर जाना अधिक पसंद करते थें। इस समय पषु पक्षियों की मात्रा अधिक होती थी।5

मारवाड चित्रकला की प्रमुख जोधपुर चित्र षैली को स्थापित करने का श्रेय राठौड़ वंषी राजा जोधा सिंह को जाता है। जोधा जोधपुर षहर एवं गढ़ की स्थापना की धीरे-धीरे सामंती संस्कृति यहा पनपते लगी जिससे यहाँ की चित्रकला में जैन षैली, गुजरात षैली और अपभ्रंष षैली का नवीकरण होने लगा।6

मरू प्रदेष का स्थानीय प्रभाव इस षैली के चित्र षैली को स्थापित दृश्टिव्य है। व मिट्टी के टीले, छोटे-छोटे झाड़ एवं पौधे, हिरण, ऊँट, कौवे, घोडे आदि के अंकन के साथ ही राजसी ठाठ -बाट दरबारी जीवन, मल-मालियों का चित्रण बडी ऊर्जा के साथ हुआ है। लाल और रंगो कलात्मक प्रयोग षैली की निजी विषेशता रही है।7

जोधपुर षैली की विषेशताएँ

जोधपुर षैली के पुरूश लम्बे-चौड़े, गठीले बदन के होते हैं तथा उनके गल -गुच्छ, ऊँची पगड़ी राजसी वैभव के वस्त्राभूशण विषेश प्रभावषाली होते है। मुखाकृतियाँ षरीर की तुलना मे छोटी है। जोधपरु षैली की नारी आकृतियाँ लम्बी, आभूशणों से सजी, ऊँचा जुड़ा, उभरा हुआ ललाट, तथा किंचित ऊपर की ओर हुई कटाष रेखा अथवा नेत्र कपोल पर झूलती हुई लहरदार अलंक दर्षनीय है। उनकी वेषभूशा में राजस्थानी लहँगा, ओढनी और लाल फूंदनों का प्रयोग प्रमुख रूप से हुआ है। बादाम की तरह आँखे और ऊँची पाग जोध ापुर षैली की अपनी निजी पहचान है। जोधपुर षैली की चित्र रचना विवेच्य काल की 2 षताब्दी तक कई उतार-चढ़ावों को झेलते हुए विकास की ओर आगे बढ़ रहीं है।8 इस षैली के चित्रों में गुजराती प्रभाव देखने को मिलता है जो इसकी भौगोलिक स्थिति और मित्रता के कारण सम्भव था। जोधपुर षैली के चित्रों मे रागमाला, ढोला- मारू, बारहमासा, मधुमालती, बीजा, सोरठ, सारंगा आदि इसी के साथ षिकार के चित्रों की भी सफल रचना हुई । इस षैली में राजस्थानी जन-जीवन का सही अर्थों में चित्रण हुआ। इसका प्रभाव बीकानेर, बूँदी तथा जयपुर की चित्र षैली पर पड़ा है।9

जोधपुर षैली मे आखेट के लघु चित्र, जोधपुर षैली मे आखेट चित्रण, महाराजाओं, सामन्त वर्ग के अलावा राजकुमारियों को भी षिकार करते हुए दिखाया गया है। महाराजाओं मे अजीत सिंह धाणेराव, मानसिंह, पृथ्वीसिंह चौहान, जसवन्त सिंह, करण सिंह, कुंवर भीमसिंह आदि राजाओं को षिकार करते हुए लघु चित्रों में दिखाया गया है।10

जोधपुर सिटी पैलस कुंवर संग्राम सिंह संग्रह जयपुर व अन्य संग्रहालयों में षिकार के कई दृष्य चित्रण अंकित है। उनमें राजाओं को हाथी-घोडो पर सवार षेर, भालू सूअर व हिरण आदि के षिकार करते हुये दिखाये गये हैं। इस समय चित्रकार डालचन्द डालू, अब्दुल्ला के पुत्र अमर दास, रहीम, रायसिंह भाटी आदि सभी ने मिलकर चित्रित किये।11

चित्र संख्या:1 कुंवर भीम सिंह द्वारा भालू का षिकार करते हुए लघु चित्र (1790 ईस्वी) का विष्लेशण चित्रकार अमरदास ने तत्कालीन समय का दृष्य चित्रित किया, यह मेहरानगढ़ संग्रहालय जोधपुर मे सुरक्षित है।

चित्र – 1

कुंवर भीमसिंह द्वारा भालू का शिकार, 1790 ई. लघुचित्र, चि. अमरदास, जोधपुर, मेहरान गढ, संग्रहालय, जोधपुर।

स चित्र में कुंवर भीम सिंह का भूमि पर दाये पैर का घुटना टिका है। बाँया पैर का हाथ की कोहनी रखकर बन्दूक को संभालकर दोनो हाथों से बन्दूक चला रहें है, जो एक जंगली भालू का षिकार कर रहे है इनके पीछे खड़े है। भालू षारीरिक बलिश्ठता में हैं व बचकर भागने की मुद्रा मे दिखाया गया है।12 भालू के पृश्ठ भूमि मे जंगल के रूप मे वृक्षो को अलंकरण रूप में प्रदर्षित किया है। इस चित्र के पृश्ठ भूमि में प्रमुख सैनिकों को इधर -इधर चलते हुये दिखाया गया है तथा किले का भी अंकन कर चित्र में आकर्शण उत्पन्न करने का प्रयास किया है। तथा आगे की पृश्ठ भूमि पर कुछ दरबारीगणों व नागरिकों का अलग-अलग कार्य करते हुए एक सफेद घोड़ा तथा एक काला घोड़ा के साथ उनके परम्परा रहन-सहन सहित चित्रित किया गया है। चित्र मे रेखा, वर्ण रूप एवं तान का लयात्मक प्रयोग व गतिमान मुद्रा भाव भंगिमा, चित्रकार अमरदास ने विषेश रूप से दर्षाया गया है। रंगों का उचित सामंजस्य कर उत्कृश्ट संयोजन निर्मित किया है जो इनकी परिपक्व सामंजस्य क्षमता को दर्षाती है।

चित्र संख्या - 2 पृथ्वीराज चौहान के द्वारा शेर का शिकार करते हुए 1850 ई. जोधपुर शैली में चित्रित किया गया है।13

यह उत्कृश्ट लघुचित्र कुंवर संग्राम सिंह जयपुर में सुरक्षित है। चित्र में सपाट पृश्ठ भूमि पर पृथ्वीराज को ओजस्वी मुद्रा में षिकार करते दिखाया गया है। उनके तेजस्वी मुख मण्डल पर षौर्य एवं पराक्रम की झलक साफ दिखाई देती है तथा बायें हाथ से तीर को साथ के कंधे तक खीच रखा है। उन्हीं के सामने च्रानों में से गुर्राते हुए षेर को निकलते हुए दिखाया गया है।14

चित्र – 2

पृथ्वीराज चौहान 1830 ई. लघुचित्र जोधपुर कुंवर संग्राम सिंह संग्रह, जोधपुर

पृथ्वीराज चौहान की षूरवीरता को दर्षानें के लिए को विषाल एवम् भयानक रूप में चित्रित किया गया है। पृथ्वीराज चौहान षारीरिक पौशाक हरा रंग में प्रदर्षित किया है। तथा कमरबन्ध पटके लाल रंग का पहने हुए है। पौशाक मे अंलकरण किया हुआ है। चौहान के पास ही पृश्ठ भाग में उनका एक सेवक भी हैं जो बायें पैर के घुटने के बल पर बैठा है तथा इसका बायें हाथ कमर पर लगी तलवार पर हैं एवम् दाहिने हाथ के द्वारा बांये कन्धे पर एक डण्डा रख रखा है। सेवक की भी दृश्टि सिंह की तरफ एकाग्रत है।

पृथ्वी राज चौहान के पृश्ठ भाग में उनके सैनिकों एवं लाव-लस्कर के चित्रित किया गया है। जो एक हाथी पर सवार है। और कुछ घोड़ों पर सवार हैं। घोड़ों का रंग लाल, पीला व सफेद है। इनके वस्त्र सफेद रंग से बने है तथा सिर पर पगडियाँ लाल, हरा व पीला रंगों से दर्षाया है।

चित्रकार ने कंगूरेदार झाडियों व घास के ढेर चित्रित करके हरियाली को दर्षाने कि कोषिष की हैं। चित्र मे भूमि पर कुछ पेड़ गहरे व कुछ हल्के रंगो मे अलग-अलग श्रेणी के आधार पर सफलता से चित्रित किया गया है। चित्र संयोजन मे चित्र के तत्व रेखा आकृति, तान, गठन व अन्तराल को सुनियोजित करके कालान्तर सषक्त अभिव्यक्ति एवं सृजन किया गया है। इस चित्र मे कलाकार की कार्य-कुषलता स्पश्ट दिखाई देती है।

चित्र सं. 3 जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह तथा रानियाँ हिरण का षिकार करते हुए (1850-60) गुवास और गोल्ड वसली 28.3 ३ 31.7 से.मी में निर्मित चित्र जोधपुर की परिपक्व षैली का प्रतिनिधित्व करता है। चित्र में भागते हुए हिरणों का चित्रकार ने विशद अध्ययन द्वारा अधिक से अधिक आकर्शक बनाया है। चित्रण में हिरणों की गति, लय और षाररिक बनावट आकर्शण को बढ़ाने मे सहायक है।

कही पर हिरण षिकार से बचने के लिए आगे-पीछे देख कर दौड़ रही है। तथा चित्र में एक हिरण का सन्तुलन बिगडने पर गिरने की स्थिति में है। चित्र भूमि के पृश्ठ भाग मे नदियों, पेडों ओर आसमान मे बादल की मौलिकता से परिपूर्ण चित्र स्वतः अपना आकर्शण उत्पन्न कर रहा है।

चित्र – 3

महाराजा तख्तसिंह तथा रानियाँ द्वारा हिरण का शिकार 1850–60 ई.

लघुचित्र जोधपुर

चित्र मे रानियों के पौषक हरा रंग में है तथा पीला रंग इनको अलंकरण कर अधिक आकर्शक स्वरूप दिया गया है। षिकार का दृष्य खुली भूमि तल पर हो रहा हैं। भूमितल मे कही पेंडो और पहाडों को दर्षाया है ताकि दर्षकों को दृष्य में जंगल का आभास हो और प्राकृतिक वातारण सौभ्य बना रहें। पेडों को घेर -घुमेर तथा उनमें सुन्दर- सुन्दर फूल, पत्तियों को बारीकी से बनाया गया है। पेडों के ऊपर सफेद रंग के पक्षियों को भी दिखाया गया है।

इस लघुचित्र मे रेखाएँ कही गहरी,, कही पतली, कही हल्की व कही मोटी छाया प्रकाष को व्यक्त कर रही है। रेखाएँ सषक्त एवं धुमावदार हैं। रंग योजना अत्यन्त आकर्शण पूर्ण हैं। सम्पूर्ण चित्र की संयोजन व्यवस्था चित्र के महत्त्व मे विषेश स्थान रखती है। यह कलाकार की बौद्विकता व कार्य कुषलता का प्रदर्षित करने का परिचायक है।

सम्पूर्ण राजस्थान वीर, साहसी, तेजस्वी, सुरमाओं का क्षेत्र रहा है, जिन्होंने अपने महापराक्रमी साहस और वीरता से संपूर्ण राजस्थान का षोर्य को ऊचा रखा है। उनकी कला- प्रियता की भूमि तत्कालीन लघुचित्रों एवं भित्ति-चित्रों में दिखाई देता है। इन कलाकृतियों मे हम उस काल की राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा लौकिक जीवन की जीवंत झांकी पाते है। भले ही जीवन संघर्श में युद्व और आखेट की महन्ता अनादिकाल से प्रभावित है। राजस्थानी कला मे यही घटित हुआ है। ऐसे चित्रों मे साहसपूर्ण सक्रियता और जीवन-षक्ति का प्रमाण मिलता है। आखेट और युद्ध दोनों मे ही विजय -भावना प्रधान रहती है। क्षेत्र लघु हो या विषाल सभी मे आाखेट के चित्रों का महत्व से प्रकट हुआ है। और साहित्य एवं कला में वीर रास,रोद्ररस महत्व से प्रकट रहा है। आखेट दृष्य मानवीय संदर्भ मे वीररस और रौद्ररस का अनुभव कराते है। इसकी स्थिति भय को भी भयानकरस बना देती है। और इस तरह आखेट -दृष्यो मे भयानकरस का अनुभव होता रहा है। सभी आखेट-चित्रो मे इन रसो की धारणा कला- पारखियो द्वारा भिन्न-भिन्न से की जाती रही। जीवो पर विजय की अनेक स्थितियाँ दिखाई देती है। पषु को पराभूत करना, उसे घायल करना, सामूहिक रीति से उसे मार देना या अस्त्र-षस्त्र के कुषल उपयोग द्वारा उसे चकित कर देना इत्यादि । जैसे कि मनुश्य आत्मरक्षा के लिए हिसक पषुओ का आखेट करता रहा है। उसी तरह पषु भी अपने आहार के लिए तथा आत्मरक्षा के लिए मानव एवं मनावेतर जीवों का षिकार करता रहा है। लेकिन अंततः संघर्श में मनुश्य विजयी हुआ और देवतारूप मे पषुपति की कल्पना भी कर डाली। राजस्थानी लघुचित्रो मे आखेट के लघुचित्रों मे कोटा ओर बूंदी मे विषेश प्रकार से अधिक चित्र चित्रित हुए है। लेकिन मारवाड़ मे राठौरो ने भी अन्य राजपूत राजवंषो की भाँति कला एवं साहित्य को पूर्ण आश्रय दिया और मारवाड क्षेत्र मरूभूमि होने के साथ अपनी अलग पहचान बनाई तथा अन्य विशयो के साथ ही आखेट चित्रांकन मे भी स्थान स्थित किया जहाँ चित्रकारों न लम्बे ढोंको वाली पहाडियों कंगुरेदार रेखाओं से असमलत भूमि, जिस पर घास के जूट्टे ऊँचे घोडो का अंकन,दौडते वेगवान घोडो का तना षरीर, भागते सुऊर,हिरण,कुन्तो,षेर, चिता आदि की सतर्क मुद्रा मे अंकन से चित्रो मे हलचल एंव आखेट के दृष्य का वास्तविक चित्रण हुए है। पेड-पौधों, बादलो,वास्तुकला आदि चित्रण सफलतापूर्वक और चित्र का संयोजन एवं रंगयोजना अत्यन्त आकर्शक तथा जोधपुरी मौलिकता उल्लेखनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

गैरोला वाचस्पति : भारतीय चित्रकला, 1990, पृ°71

अग्रवाल मधु प्रसाद : मारवाड की चित्रकला, 1993, पृ.45-46

द्विवेदी प्रेमषंकर : राजस्थानी चित्रकला, 2002, पृ.69

गोस्वामी प्रेमचन्द, भारतीय कला के विविध स्वरूप, 1997, पृ.22

सिंह डॉ. सुशमा सिंह -राजस्थानी चित्र -षैली में आखेट दृष्य, 2013,पृ.94,95

नीरज डॉ.जयसिंह राजस्थानी चित्रकला, 2009, पृ.38

नीरज डॉ.जयसिंह राजस्थानी चित्रकला, 2009, पृ.38

षुक्ला डॉ अन्नपूर्णा - किषनगढ़ चित्र षैली, 2007, पृ.12

नीरज डॉ. जयसिंह -राजस्थानी चित्रकला, 2009, पृ.38

कैट लॉग, राजस्थानी चित्रों मे षिकार प्रदर्षनी,अप्रैल 1972 (पुरााातत्व एवं संग्रहालय विभाग राजस्थान, जयपुर), पृ.17

डॉ. वषिश्ट धर्मवीर-मारवाड की चित्रांकन एवं चित्रकार, 2011, पृ.63

डॉ. वषिश्ट धर्मवीर-मारवाड की चित्रांकन एवं चित्रकार, 2011, पृ.70

डॉ. वषिश्ट धर्मवीर-मारवाड की चित्रांकन एवं चित्रकार, 2011, पृ.70

www.Indianminia+urepaintings.co.uk, कंजम 14ण्11ण्2017